ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(6): 82-87
www.allresearchjournal.com
Received: 13-04-2017
Accepted: 14-05-2017

Rekha Kumari
Department of Sanskrit,
University of Delhi, India

Correspondence
Rekha Kumari
Department of Sanskrit,
University of Delhi, India

भरद्वाज ऋषि एवं उनके वंशज

Rekha Kumari

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में वैदिक वाङ्मय, धर्म, दर्शन और संस्कृति के सन्दर्भ में ऋषियों का सर्वाधिक योगदान रहा है। भारत राष्ट्र को विश्वगुरु और भारतीय संस्कृति को विश्ववरणीय प्रथम संस्कृति बनाने में ऋषियों का ही सर्वोपरि योगदान है। वस्तुतः ज्ञान-विज्ञान की सभी धाराओं के प्रवर्तक ऋषि ही तो हैं। [1]

1. ऋषि

प्रत्येक मन्त्र पाठ से पूर्व मन्त्रों के ऋषि, देवता तथा छन्द का निर्देश मिलता है। सामान्यतया मन्त्रों के द्रष्टा अथवा स्तुतियों के प्रयोक्ता व्यक्ति को ऋषि [2], मन्त्रों के प्रतिपाद्य विषय अथवा स्तोतव्य देव को देवता [3] एवं अक्षरों के विविध परिणामों को छन्द [4] कहा जाता है। मन्त्रों के अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न देवताओं के प्रति विविध स्तुतियों का प्रयोग करके उन्हें प्रसन्न करना तथा उनसे ऐश्वर्य, सम्पत्ति, संरक्षण एवं सहायता आदि प्राप्त करना इन ऋषियों की प्रधान विशेषता रही है। ऋषि तत्त्व की दो प्रधान परिभाषाएँ मिलती हैं-

1.1. जिन्होंने समाधि की अलौकिक स्थिति में मन्त्रों का दर्शन किया है उनको ऋषि कहा जाता है। [5] निरुक्तकार यास्क ने 'ऋषि' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा है कि-"ऋषिदर्शनात्। स्तोमान् ददर्शेत्यौपमन्यवः"। [6]

यास्काचार्य औपमन्यव के अनुसार 'ऋषि' शब्द को 'दृश्' धातु से निष्पन्न मानते हैं क्योंकि इन ऋषियों ने स्तोमों का दर्शन किया है। 'ऋषि' शब्द को गत्यर्थक 'ऋष्' धातु से भी निष्पन्न माना है। इसके अनुसार "तपस्या में रत इन ऋषियों के पास मन्त्र गए अथवा उन्हें प्राप्त हुए"।

> "तद्येनांस्तपस्यमानान्ब्रह्म स्वयम्भ्वभ्यानर्षत्त ऋषयोऽभवंस्तदृषीणामृषित्वमिति विज्ञायते"। [7]

शतपथ ब्राह्मण में 'ऋषि' शब्द को 'रिष्' धातु से निष्पन्न माना गया है जिसका अर्थ 'तप करना' हुआ-"श्रमेण तपसा अरिषन्त, तस्माद् ऋषयः"। [8] इस प्रकार 'ऋषि' शब्द दृश्, ऋष् और रिष् धातु से निष्पन्न माना गया है किन्तु प्रत्येक स्थिति में यही अभिप्राय प्रतीत होता है कि ऋषि वे हैं जिन्होंने तपस्यारत होकर समाधि में मन्त्रों का दर्शन किया। यास्काचार्य निरुक्त के प्रथम अध्याय में कहते है कि ऋषियों ने 'धर्म' का साक्षात्कार किया था- "साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः"। [9]

निरुक्त के व्याख्याकार आचार्य दुर्ग ने अपनी व्याख्या में 'ऋषि' शब्द की 'ऋष्' (दर्शने) धातु से व्युत्पत्ति मानी है। इनके अनुसार "जिन विशिष्ट व्यक्तियों ने मन्त्रों का विविध अवसरों पर, विविध कार्यों में प्रयोग करके उनसे उत्पन्न होने वाले फलों का सक्षात्कार किया वे ऋषि हैं"।

> "ऋषन्ति अमुष्मात् कर्मणः एवम् अर्थवता मन्त्रेणा संयुक्ताद् अमुना प्रकारेण एवं लक्षणः फल-विपरिणामो भवति इति पश्यन्ति त ऋषयः"। [10]

ऋषियों के द्वारा मन्त्रों के साक्षात्कार अथवा दर्शन करने के भाव को ही दर्शाते हुए बृहद्देवता तथा

अनुक्रमणी ग्रन्थों में 'मंत्रदृक्' तथा 'अपश्यत्' जैसे शब्दों का प्रयोग किया गया है। शौनक ऋषियों को मन्त्रद्रष्टा ही मानते हैं- "मन्त्रदृग्भ्यो

नमस्कृत्वा समाम्नायानु पूर्वशः"। [11]

"ऋषिरतीन्द्रियद्रष्टा"। [12]

"ऋषिः सूक्तद्रष्टा"। [13]

महर्षि अरविन्द ने वेदों को ईश्वरीय वाणी कहा है जो ऋषियों के अन्तःकरण में प्रविष्ट हुई थी। ऋग्वेद में ही मन्त्रों के दर्शन या दिव्य वाणी के ऋषियों तक पहुँचने के सम्बन्ध में कई सन्दर्भ प्राप्त होते हैं। [14]

1.2. ऋग्सर्वानुक्रमणिका में मन्त्ररूप वाक्यों के वक्ता को ऋषि कहा गया है। [15] निरुक्तकार के अनुसार जिस-जिस ने अपनी कामनाओं की पूर्ति के लिए देवता की स्तुति की उस-उस को उन-उन मन्त्रों का ऋषि माना लिया गया-

"यत्काम ऋषिर्यस्यां देवतायाम् आर्थपत्यम् इच्छन् स्तुतिम् प्रयुङ्क्ते। तद्दैवतः स मन्त्रो भवति"। [16]

बृहद्देवता के अनुसार 'ऋषि' शब्द का अर्थ 'वक्ता' है। [17] ऋग्वेद में भी अनेकशः ऋषियों को मन्त्रकृत्, कवि तथा उनके स्तोम को काव्य कहा गया है। वशिष्ठ कहते हैं कि उन्होंने वज्रधारी इन्द्र के लिए नवीन मन्त्र बनाया है।

यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है कि ऋषि 'मन्त्रों के द्रष्टा थे' अथवा 'मन्त्रों के प्रणेता थे'। इस सन्दर्भ में किसी भी प्रकार के निर्णय पर पहुँचना असम्भव ही है। मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हुए कहा जा सकता है कि वसिष्ठ, कण्व, गृत्समद आदि महान् ऋषियों ने तपोबल से दिव्य ज्ञान का साक्षात्कार अर्थात् दर्शन या श्रवण किया था जिसकी यथावत् अभिव्यक्ति मन्त्रों के रूप में हुई थी। मन्त्रों की रचना बुद्धिपूर्वक नहीं हुई थी किन्तु परवर्ती युग के कुछ अर्वाचीन मन्त्र ऐसे भी थे जिन्हें तराशकर अभिव्यक्ति दी गई थी। इसमें मन्त्र द्रष्टा ऋषि मन्त्र का प्रणेता भी बन गया था।

2. ऋषि परम्परा

ऋग्वेद में देवचरित, ऋषिचरित और मानवचरित नामक तीन प्रकार के चरित वर्णित हैं। देव तथा मानव के मध्य ऋषि वह जीवन्त माध्यम है जो दिव्यज्ञान को मानव तक लाने और मानव को उस दिव्य ज्ञान तक पहुँचाने का मार्ग बताता है। इस सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को और सृष्टि व्यवस्था के संचालक नियमों को ऋषियों ने अपने तपोबल से जाना है। अतः ऋषियों को ऋतसाप, ऋतवान् और ऋतावृध भी कहा गया है। [18]

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि वेद विभिन्न ऋषियों तथा उन में से कुछ ऋषियों के वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्रों का संग्रह है। श्रीमद्भागवत पुराण [19] के अनुसार कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास ने मूल वेद को चार भागों में विभाजित करके अपने चार शिष्यों को पढ़ाया था और शताब्दियों तक चार मूल संहिताओं का अध्ययन-अध्यापन गुरु-शिष्य परम्परा से चलता रहा। मूल वेद में से ऋग्वेद पैल ऋषि को, यजुर्वेद वैशम्पायन ऋषि को, सामवेद जैमिनी ऋषि को तथा अथर्ववेद सुमन्तु ऋषि को पढ़ाया था। इस प्रकार ऋषि-परम्परा वेदों के आरम्भ से ही चली आ रही है।

द्वितीय मण्डल से सप्तम मण्डल तक का भाग ऋग्वेद का मौलिक तथा प्राचीनतम अंश माना जाता है जिसका सम्बन्ध विशिष्ट ऋषियों तथा उनके वंशजों द्वारा दृष्ट मन्त्रों से है। अतः इन मण्डलों को 'वंशमण्डल' के नाम से भी जाना जाता है। अनुक्रमणी ग्रन्थों में सूक्तों एवं मन्त्रों के द्रष्टा ऋषियों का परिचय प्राप्त होता है। ऋग्वेद के प्रत्येक सूक्त और मन्त्रों के ऋषियों का अनुक्रम शौनक की 'आर्षानुक्रमणी' और 'बृहद्देवता' में प्राप्त होता है। तालिका 1 के माध्यम से ऋग्वेद में वर्णित ऋषि एवं ऋषिकाओं को जाना जा सकता है।

ऋग्वेद में संकलित मन्त्र अनेक ऋषिकुलों से सम्बन्धित हैं जिनमें कुछ अत्यन्त प्राचीन हैं और कुछ अर्वाचीन भी हैं। ऋग्वेद के प्रारम्भ में ही इस तथ्य का स्पष्ट संकेत प्राप्त होता है-"अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत"। [20]

अर्थात् अग्नि देवता की पूर्व ऋषियों ने स्तुति की है और नवीन ऋषियों ने भी। सायणाचार्य के अनुसार पूर्व से तात्पर्य भृगु, अङ्गिरा आदि ऋषियों से है तथा नवीन से तात्पर्य विश्वामित्र, मधुच्छन्दा आदि से है। [21] ऋग्वेद में ऋत को प्राप्त कर लेने वाले ऋतयुक्त, ऋत को बढ़ाने वाले पुरातन ऋषियों के विषय में वर्णन प्राप्त होता है। [22]

अथर्ववेद [23] में पूर्वज ऋषियों के ऋण को स्वीकार करते हुए उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई है-

"इदं नमः ऋषिभ्यः पूर्वजेभ्यः पूर्वेभ्यः पथिकृद्भ्यः"।

ऋग्वेदीय वंशमण्डल कई पीढ़ियों तक चली आ रही ऋषि परम्परा का ही प्रमाण है। ऋग्वैदिक ऋषियों के साथ कई गोत्रनाम जुड़े हुए हैं। यथा- आत्रेयी, आङ्गिरसी, भारद्वाज, काण्व, भार्गव, वैश्वामित्र, वशिष्ठ, बार्हस्पत्य आदि। इन नामों को हम मन्त्रद्रष्टाओं की सुदीर्घ परम्परा का ज्ञापक मान सकते हैं। बृहद्देवता में संकलित 'श्यावाश्व का आख्यान' भी इसका सुन्दर उदाहरण है। जहाँ अत्रि ऋषि की स्तुति करते हुए रथवीती कहते हैं-

"ऋषेः पुत्रः स्वयमृषिः पितासि भगवन्नृषेः"। [24]

अर्थात् "हे भगवन् ! आप ऋषि के पुत्र हैं, स्वयं ऋषि हैं और ऋषि के पिता भी हैं"। इस प्रकार ऋग्वेद में प्राचीन और अर्वाचीन ऋषियों की अनेक सहस्राब्दियों की साक्षात्कारात्मक अनुभूतियों का संकलन है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वैदिक युग में मन्त्रद्रष्टा ही ऋषि पद के अधिकारी होते थे। परवर्ती युग में उन्हें भी ऋषि कहा गया जिन्होंने ज्ञान की किसी-न-किसी शाखा का प्रवर्तन किया भले ही वह मन्त्रद्रष्टा नहीं थे। परवर्ती ऋषियों को यह दिव्य ज्ञान श्रुति या श्रवण परम्परा से प्राप्त हुआ। [25] यास्काचार्य ने भी संकेत करते हुए कहा है कि-

"साक्षात्कृतधर्माण ऋषयो बभूवुः। ते अवरेभ्यः असाक्षात्कृतधर्मेभ्यः उपदेशेन मन्त्रान् सम्प्रादुः"। [26]

पुरातन काल में धर्म का साक्षात्कार करने वाले श्रेष्ठ ऋषि हुए थे। इन ऋषियों ने धर्म का साक्षात्कार न करने वाले अवर ऋषियों को उपदेश के माध्यम से मन्त्र प्रदान किये थे। इस प्रकार पहले स्वयं मन्त्रों का दर्शन करके तत्पश्चात् मन्त्रों को उपदेश अथवा शिक्षा के रुप में अपने शिष्यों को प्रदान करने से यह ऋषि-परम्परा निर्मित हुई। ऋग्वेद संहिता में वर्णित ऋषि परम्परा को तालिका 1 के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

3. भरद्वाज ऋषि: उत्पत्ति और वंशज

निरुक्तकार यास्काचार्य ने निरुक्त में भरद्वाज शब्द का निर्वचन करते हुए कहा है कि "भरणाद् भारद्वाजः" [27] अर्थात् भरण क्रिया-योग से भारद्वाज नाम पड़ा है। इसका संकेत शतपथ ब्राह्मण में आध्यात्मपरक अर्थ में मिलता है -

"मनो वै भरद्वाज ऽऋषिरन्नं व्वाजो यो वै मनो बिभर्त्ति। सोऽन्नं व्वाजं भरति तस्म्मान्मनो भरद्वाज ऽऋषिः"। [28]

अर्थात् 'यह मन ही भरद्वाज ऋषि है। अन्न वाजरूप होता है। यह वाज मन को थामता है उसका भरण पोषण करता है। इस कारण यह मन भरद्वाज ऋषि के नाम से कहा जाता है'।

तालिका 1 : ऋग्वेद में वर्णित ऋषि एवं ऋषिकाएँ

मण्डल	सूक्त सङ्ख्या	मन्त्र सङ्ख्या	ऋषियों तथा ऋषिकाओं के नाम
प्रथम	191	2006	मधुच्छन्दस्रोमशा ब्रह्मवादिनी आदि ,पराशर ,गौतम ,अगस्त्य ,दीर्घतमा ,मेधातिथि ,
द्वितीय	43	429	गृत्समदएवं उनके वंशज ,
तृतीय	62	617	विश्वामित्र एवं उनके वंशज
चतुर्थ	58	589	वामदेव एवं उनके वंशज
पञ्चम	87	727	अत्रि एवं उनके वंशज
षष्ठ	75	765	भरद्वाज एवं उनके वंशज
सप्तम	104	841	वशिष्ठ एवं उनके वंशज
अष्टम	103	1716	कण्वभृगु अंगिरस् एवं उनके वंशज ,
नवम	114	1108	पूर्व ऋषिगण
दशम	191	1754	त्रित ,इन्द्राणी ,श्रद्धा कामायनी ,इन्द्र ,विमद ,शचीउर्वशी आदि ,
कुल योग	1028	10,552	

3.1. सप्तऋषि कल्पना

ऋग्वेद सर्वानुक्रमणी में सूक्त द्रष्टा ऋषियों को सप्तर्षि कहते हुए उनके नामों पर प्रकाश डाला गया है- भारद्वाज कश्यप, मारीच, गौतम राहुगण, अत्रि, विश्वामित्र गाधिन, जमदग्नि भार्गव और वसिष्ठ मैत्रावरुणि। [29] ऋग्वेद संहिता के आधार पर गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भरद्वाज, वसिष्ठ और काण्व को ही सप्तर्षियों में समाविष्ट करना अधिक युक्त है। ये सप्तर्षि क्रमशः द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम और अष्टम मण्डल के ऋषि हैं। इस प्रकार ज्ञात होता है कि ऋग्वेदीय षष्ठ मण्डल के मन्त्रद्रष्टा ऋषि बार्हस्पत्य भरद्वाज हैं।

3.2. भरद्वाज ऋषि की उत्पत्ति

बृहद्देवता में वर्णन है कि भरद्वाज ऋषि अङ्गिरस के पौत्र तथा बृहस्पति के पुत्र थे-

"योऽङ्गारेभ्य ऋषिर्जज्ञे तस्य पुत्रो बृहस्पतिः।
बृहस्पतेर्भरद्वाजो विदथीति य उच्यते" ॥ [30]

श्रीमद्भागवत् पुराण में भरद्वाज ऋषि की उत्पत्ति का वर्णन प्राप्त होता है। इनके पिता बृहस्पति थे तथा माता ममता थी। पुत्र के पोषण तथा संरक्षण के विषय को लेकर दोनों में विवाद हुआ था तथा दोनों ने एक-दूसरे पर भरण-पोषण का भार डालने का प्रयास किया था। श्रीमद्भागवत् पुराण [31] में प्राप्त श्लोक विचारणीय है-

"मूढ़े भरद्वाजमिमं भरद्वाजं बृहस्पते। यातौ यदुक्त्वा पितरौ भरद्वाजस्ततस्त्वयम्" ॥

उपरोक्त श्लोक में 'द्वाज' का अर्थ 'दो से उत्पन्न सन्तान' है। बालक माता-पिता से उत्पन्न होने पर 'द्वाज' कहलाया। दोनों एक दूसरे को बालक की रक्षा का 'भार' देकर चले गये। इसी कारण वह बालक भरद्वाज कहलाया। इन दोनों का एक पुत्र दीर्घतमस् हुआ जिसने स्वयं को मामतेय कहा तथा भरद्वाज ने स्वयं को बार्हस्पत्य कहा।

3.3. भरद्वाज एवं वंशज

ऋग्वेदीय षष्ठ मण्डल के रचयिता ऋषि भरद्वाज और उनके वंशज हैं। भरद्वाज ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्रों के अंत में 'शतहिमा सुवीराः मदेम' का प्रयोग है। इस वाक्य से यह प्रमाणित होता है कि भरद्वाज ऋषि ने इस प्रकार अपने इष्ट देव से दीर्घायु की कामना की होगी। षष्ठ मण्डल के अधिकांश सूक्तों में भरद्वाजाय, भरद्वाजे, भरद्वाजाः, भरद्वाजान् तथा भरद्वाजवत् आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। जिनका वर्णन तालिका 2 में वर्णित है।

भरद्वाज ऋषि के वंशज का ज्ञान हमें षष्ठ मण्डल के अध्ययन से प्राप्त होता है। प्रत्येक सूक्त के आरम्भ में ऋषि, देवता और छन्द आदि का परिचय दिया जाता है। इन सूक्तों में कई सूक्त ऐसे हैं जहाँ पर ऋषि नाम के साथ उनके पूर्वज अथवा गोत्र का भी परिचय दिया गया है। यथा- 'पायुर्भारद्वाजः' [32]।

तालिका 2: भरद्वाज ऋषि से सम्बन्धित ऋग्वेदीय मन्त्र।

क्र.	नाम	मन्त्र एवं सूक्त संख्या	उद्धरण
1	भरद्वाजाय	6.15.3	भरद्वाजाय सप्रथः।

		6.16.5 6.16.33 6.31.4 6.48.13 6.63.10	भरद्वाजाय दाशुषे। भरद्वाजाय सप्रथः। भरद्वाजाय गृणते वसूनि। भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता। भरद्वाजाय वीर नू गिरे।
2	भरद्वाजे	6.17.14 6.48.7	भरद्वाजे नृवत इन्द्र सूरीन्। भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य।
3	भरद्वाजवत्	6.65.6	भरद्वाजवद्विधते मघोनि।
4	भरद्वाजेषु	6.10.6 6.23.10 6.35.4	भरद्वाजेषु दधिषे। भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः। भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः।
5	भरद्वाजाः	6.25.9 6.50.15	भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम्। भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः।
6	भारद्वाजः	6.51.12	भारद्वाजः सुमतिं याति होता।

ऋग्वेदीय षष्ठ मण्डल के सुक्तों में वर्णित ऋषियों का अवलोकन करके भरद्वाज ऋषि और उनके वशंज का परिचय दिया जा रहा है-

3.3.1. भरद्वाज बार्हस्पत्य- ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद में भरद्वाज का ऋषित्व दृष्टिगत होता है। ऋग्वेद का सम्पूर्ण षष्ठ मण्डल भरद्वाज ऋषि और इनके वंशज द्वारा दृष्ट है। षष्ठ मण्डल के 75 सूक्तों में से 59 सूक्त के द्रष्टा भरद्वाज ऋषि ही हैं।

3.3.2. शंयु बार्हस्पत्य- इनका चारों वेदों में ऋषित्व प्रख्यात है। बृहस्पति के पुत्र होने के कारण इन्हें बार्हस्पत्य की संज्ञा दी गई है। षष्ठ मण्डल में इनका नाम शंयु बार्हस्पत्य के रुप में लिखित है। इनके नाम से ज्ञात होता है कि ये बार्हस्पत्य के वंशज है "चतुर्दशर्चं तृतीय सूक्तं बृहस्पतिपुत्रस्य शंयोरार्षमैन्द्रं"। [33] शंयु द्वारा षष्ठ मण्डल में 4 सूक्त (44वें, 45वें, 46वें और 48वें) दृष्ट हैं।

3.3.3. ऋजिश्वा भारद्वाज- ऋजिश्वा को भरद्वाज गोत्रीय माना जाता है इसलिये इनके नाम के साथ भारद्वाज पद संयुक्त है। षष्ठ मण्डल के 4 सूक्तों (49वें, 50वें, 51वें और 52वें) का इनके द्वारा साक्षात्कार किया गया है। ऋग्वेद [34] में ऋजिश्वा ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्रों में भरद्वाज का दो जगह वर्णन किया है।

3.3.4. पायु भारद्वाज- वैदिक ऋषियों में पायु भारद्वाज ऋषि का नाम प्रसिद्ध है। इनके द्वारा षष्ठ मण्डल में मात्र एक ही (75वें) सूक्त का दर्शन किया गया है। इनके ऋषित्व के सन्दर्भ में सायण का मत है- "चतुर्दशं सूक्तं भारद्वाजस्य पायोरार्षम्"। [35] बृहद्देवता [36] के अनुसार पायु भरद्वाज ऋषि के पुत्र हैं।

3.3.5. गर्ग भारद्वाज- गर्ग का ऋषित्व ऋग्वेद और यजुर्वेद में उपन्यस्त है। षष्ठ मण्डल के 47वें सूक्त में ही इनका नाम दर्शनीय है अर्थात् गर्ग ऋषि द्वारा केवल एक ही सूक्त का साक्षात्कार किया गया है। सायण भाष्य में इन्हें भरद्वाज का पुत्र कहा गया है- "भरद्वाजपुत्रस्य गर्गस्यार्षं"। [37]

3.3.6. सुहोत्र भारद्वाज- ऋग्वेदीय षष्ठ मण्डल के *2* सूक्तों (*31*वें और *32*वें) के द्रष्टा सुहोत्र ऋषि है। सायण भाष्य में इनको भरद्वाज ऋषि का पुत्र कहा गया है- "भरद्वाजस्य सुहोत्रस्यार्षं"। [38]

3.3.7. नर भारद्वाज- ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल के 35वें और 36वें सूक्तों के द्रष्टा नर ऋषि है। इन्होंने ऋग्वेद के मन्त्र '6.35.4*'* में भरद्वाज ऋषि का वर्णन किया है। [39]

3.3.8. शुनहोत्र भारद्वाज- भरद्वाज पुत्र शुनहोत्र षष्ठ मण्डल के 33वें एवं 34वें सूक्त के द्रष्टा ऋषि हैं।

3.3.9. पुरमीढ और अजमीढ- इन दोनों के द्वारा कोई दृष्ट सूक्त या मन्त्र प्राप्त नहीं होता है। सुहोत्र "भरद्वाजस्य सुहोत्रस्यार्षं" [40] ऋषि को भरद्वाज गोत्रीय कहा गया है। ऋग्वेद "सुहोत्रपुत्रौ पुरुमीढहाजमीळहावृषी*"* [41] में पुरमीढ और अजमीढ को सुहोत्र पुत्र कहा गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार भरद्वाज ऋषि और उनके वशंज ऋषियों द्वारा दृष्ट सूक्तों का अवलोकन करते हुए भरद्वाज ऋषि के वंशज [42] को चित्र सङ्ख्या 1 के माध्यम से प्रस्तुत किया जा रहा है-

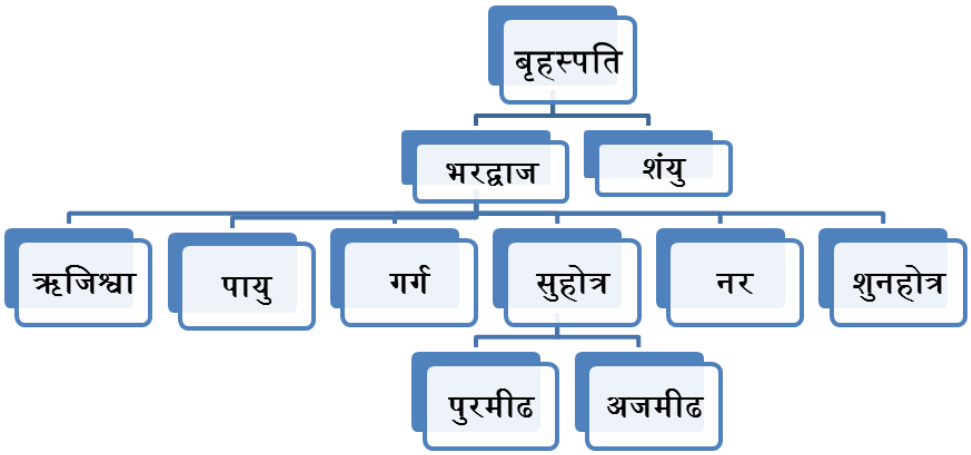

चित्र 1 : भरद्वाज एवं वंशज

षष्ठ मण्डल के अध्ययनोपरान्त तालिका 3 में भरद्वाज ऋषि के वंशज ऋषियों का नाम और उनके द्वारा दृष्ट सूक्तों का उल्लेख किया गया है-

तालिका 3: भरद्वाज ऋषि के वंशज ऋषियों का नाम तथा उनके द्वारा दृष्ट सूक्तों का विवरण

क्र.	ऋषिनाम	कुल दृष्ट सूक्त	दृष्ट सूक्तों की संख्या
1	भरद्वाज	59 सूक्त	1-30, 37-43, 53-74
2	शंयु	4 सूक्त	44, 45, 46, 48
3	ऋजिश्वन्	4 सूक्त	49, 50, 51, 52
4	पायु	1 सूक्त	75
5	गर्ग	1 सूक्त	47
6	सुहोत्र	2 सूक्त	31, 32
7	नर	2 सूक्त	35, 36
8	शुनहोत्र	2 सूक्त	33, 34
कुल सूक्त		75 सूक्त	765 मन्त्र

संधर्व सूची

1. ऋग्वैदिक ऋषिका : जीवन एवं दर्शन, डॉ. इला घोष, पृ. 14
2. यस्य वाक्यं स ऋषिः। (ऋक्. सर्वा., 2.4)।
3. या तेनोच्यते सा देवता। (ऋक्. सर्वा., 2.5)।
4. यदअक्षरपरिमाणं तच्छन्दः। (ऋक्. सर्वा., 2.6)।
5. ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः। (अष्टा. 4.1.114 की सूत्रवृत्ति)।
6. नि., 2.11
7. नि., 2.3.11
8. श. ब्रा., 6.1.1
9. निरुक्त 1.6.20
10. वैदिक ऋषि : एक परिशीलन, डॉ. कपिलदेव शास्त्री, कुरुक्षेत्र विश्विद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1978, पृ. 3
11. बृहद्देवता, 1.1
12. ऋ. 9.87.3 पर सायण भाष्य।
13. ऋ. 9.113.2 पर सायण भाष्य।
14. ऋ., 10.71.3
15. यस्य वाक्यं स ऋषिः। (ऋक्. सर्वा. 2.4)।
16. नि., 7.1
17. संवादेष्वाह वाक्यं यः स तु तस्मिन् भवेद् ऋषिः। (बृ. दे. 2.28)।
18. ऋग्वैदिक ऋषिका : जीवन एवं दर्शन, डॉ. इला घोष, पृ. 15
19. तदृग्वेदधरः पैलः सामगो जैमिनिः कविः।
वैशम्पायन एवैको निष्णातो यजुषामुत।
अथर्वाङ्गिरसामासीत्सुमन्तुर्दारुणो मुनिः ॥ (श्रीमद्भा. पु. 1.4.21-22)।
20. ऋ., 1. 2
21. ऋ. 1. 2 पर सायण भाष्य।
22. ऋ., 10.154.4
23. अथर्व., 18.1.2
24. बृ. दे., 5.78
25. ऋग्वैदिक ऋषिका : जीवन एवं दर्शन, डॉ. इला घोष, पृ. 18
26. नि., 1.6.20
27. नि., 3. 7
28. शत. ब्रा. 8.1.1.9

29. ऋ. सर्वा., 9.107.1-26, 10.137.1-7
30. बृ. दे., 5.102
31. श्रीमद्भा. पु., 9.20.38
32. ऋ., 6. 75.1
33. ऋ. 6.46 पर सायण भाष्य।
34. ऋ. 6.50.15
    ऋ. 6.51.12
35. ऋ. 6.75 पर सायणभाष्य।
36. बृ. दे. 5.127
37. ऋ. 6.47 पर सायणभाष्य।
38. ऋ. 6.31 पर सायणभाष्य।
39. ऋ. 6.35.4
40. ऋ. 6.31 पर सायणभाष्य।
41. ऋ. 4.43 पर सायणभाष्य।
42. ऋग्वेद-संहिता, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं भगवती देवी शर्मा,
    पृ. 2-12 (परिशिष्ट 1)।